IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के समायोजन का विश्लेषणात्मक अध्ययन

शुभम यादव

शोध–छात्रा, शिक्षा संकाय, (आवासीय परिसर), डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय अयोध्या

डॉ. नीलम सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, (आवासीय परिसर), डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय अयोध्या

सरांशः प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की समायोजन क्षमता का विश्लेषण करना है। समायोजन क्षमता शिक्षक शिक्षा प्रणाली का केन्द्रीय स्तम्भ है और यह शिक्षकों की मनोवैज्ञानिक, सामाजिक एवं व्यावसायिक समायोजन क्षमता विद्यालय की कार्य कुशलता तथा विद्यार्थियों के अधिगम परिणामों को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में तकनीकी परिवर्तन, प्रशासनिक दबाव, कार्यभार तथा सामाजिक अपेक्षाओं के कारण शिक्षकों पर बहु–आयामी दबाव बढ़ा है, जिससे समायोजन की आवश्यकता और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। इस अध्ययन में समायोजन के विभिन्न आयामों जैसे– व्यक्तिगत, सामाजिक, भावनात्मक तथा व्यावसायिक आदि का विश्लेषण किया गया है। शोध के लिए शोध विधि के रूप में गुणात्मक शोध विधि का प्रयोग किया गया है जिसमें माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों से सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण के परिणामों के आधार का विश्लेषण कर निष्कर्ष निकाले गए। अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि जिन शिक्षकों में समायोजन क्षमता उच्च होती है, उनमें शिक्षण प्रभावशीलता, कार्य संतुष्टि तथा विद्यार्थियों के साथ सकारात्मक सम्बन्ध अधिक पाए जाते हैं।

मुख्य शब्दः *माध्यमिक विद्यालय, शिक्षक, समायोजन, राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 आदि।*

प्रस्तावनाः समायोजन मनुष्य के जीवन का अनिवार्य तत्व है। यह वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने आंतरिक भावों और बाह्य परिस्थितियों के बीच संतुलन स्थापित करता है। विद्यालयी परिवेश में शिक्षक को विद्यार्थियों, अभिभावकों, सहकर्मियों, प्रशासनिक अधिकारियों तथा बदलती शैक्षिक नीतियों के साथ निरंतर समन्वय स्थापित करना पड़ता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और उसे समाज के नियमों का पालन करने के लिए समय–समय पर अपने जीवन में समायोजन करना पड़ता है इस प्रकार मनुष्य अपने अस्तित्व को बचाने के लिए जीवन की विभिन्न परिस्थितियों और वातावरण के साथ समायोजन करता है जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हमें समायोजन की आवश्यकता पड़ती हैद्य विभिन्न परिस्थितियों से संघर्ष कर सफलता के अन्तिम बिन्दु तक पहुँच पाने का कार्य वही व्यक्ति कर सकता है, जिसके अन्दर स्वयं को समायोजित करने की क्षमता होती है और शिक्षा ही वह साधन है जिसके माध्यम से व्यक्ति में समायोजन की क्षमता का विकास होता है, व्यक्ति समायोजन के द्वारा ही जीवन की विभिन्न परिस्थितियों पर विजय प्राप्त करता है।

भारतीय समाज परिवर्तनशील समाज है यहाँ पर कुछ ना कुछ नया स्वरूप हमेशा देखने को मिलता है, इस परिवर्तन के परिप्रेक्ष में शिक्षा में जो परिवर्तन आने चाहिए वे परिवर्तन नहीं आ रहे हैं जिससे कई प्रकार की समस्याएँ जन्म ले रही हैं। अध्यापक अपने आप को इस बदलाव के अनुकूल ढालने में असमर्थ महसूस कर रहा है, इस कारण से इनका मानसिक स्तर, शारीरिक क्षमता, कार्य संतुष्टि, व्यावसायिक दक्षता एवं व्यवसायिक अभिवृत्ति का स्तर गिरता जा रहा है जिसके कारण उनके अंदर अपने विद्यालय वातावरण में समायोजन करने में समस्या होती है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि समायोजन निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है समायोजन के द्वारा ही व्यक्ति अपनी समस्याओं को सुलझाता है। व्यक्ति यदि इन समस्याओं को सुलझाने में सफल हो जाता है तो उसकी समायोजन क्षमता अच्छी कहलाती है और यदि वह असफल हो जाता है तो उसकी समायोजन क्षमता अच्छी नहीं मानी जाती हैद्य समायोजन को परिभाषित करते हुए *एल. एस. शेफर (1956)* ने कहा कि ”समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा कोई जीवधारी अपनी आवश्यकताओं, तथा इन आवश्यकताओं की संतुष्टि से संबंधित परिस्थितियों में संतुलन बनाए रखता है” *फ्रायड (1937)* के अनुसार– व्यक्ति का व्यवहार अवचेतन प्रेरणाओं से प्रभावित होता है। यदि व्यक्ति अपनी आंतरिक इच्छाओं और सामाजिक मानदंडों के बीच संतुलन स्थापित कर लेता है, तो वह समायोजित कहलाता है। *स्किनर (1953)* के अनुसार– समायोजन सीखने की प्रक्रिया का परिणाम है। अनुकूल व्यवहार को प्रोत्साहन मिलने पर व्यक्ति पर्यावरण के अनुरूप ढल जाता है। *कार्ल रोजर्स (1961)* के अनुसार– आत्म–अनुभूति और वास्तविक अनुभवों के बीच सामंजस्य ही स्वस्थ समायोजन का आधार है।

इस प्रकार समायोजन प्रक्रिया में शिक्षकों का योगदान महत्वपूर्ण हो जाता है। एक शिक्षक के समायोजन का स्तर सीधे उसके कार्य की क्षमता से जुड़ा होता है, शिक्षक बौद्धिक सक्रियता के अलावा, सामाजिक रूप से उभरता हुआ तथा भावनात्मक रूप से एक व्यक्ति को एकीकृत करता हैद्य शिक्षक राष्ट्र को आर्थिक समृद्धि, सामाजिक उत्थान और औद्योगिक उन्नति के पथ पर ले जाता हैद्य शिक्षा मनुष्य में सर्वांगीण क्षमता का विकास करती है, विशेष रूप से उसके मस्तिष्क की ताकि वह सर्वोच्च सत्य, अच्छाई और सुंदरता का चिंतन एवं आनंद लेने में सक्षम हो सके, शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के अध्याय 5.3* में कहा गया है कि शिक्षक और समुदाय के बीच में इस प्रकार सम्बन्ध बने कि शिक्षक अपने समुदाय से जुड़कर विद्यार्थियों का रोल मॉडल बन सके, और उन्हें शैक्षिक वातावरण भी प्रदान कर सके। इसे सुनिश्चित करने के लिए अत्यधिक शिक्षक स्थानांतरण पर रोक लगाने की बात कही गई है, साथ ही स्कूलों में काम के वातावरण और संस्कृति में आमूलचूल परिवर्तन करने का प्राथमिक लक्ष्य एवं शिक्षकों की क्षमताओं को अधिकतम स्तर तक बढ़ाने की बात की गई है, ताकि वे अपना काम प्रभावी ढंग से कर सके और यह सुनिश्चित कर सके कि वे छात्रों, अभिभावकों, प्रधानाध्यापकों और अन्य सहायक कर्मचारियों के एक समावेशी समुदाय का हिस्सा बन सके, जिनका एक लक्ष्य यह सुनिश्चित करना होगा कि सभी बच्चे सीख रहे हैं। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के अध्याय 15.1* में कहा गया है शिक्षक आने वाली पीढ़ी को आकार देते हैं शिक्षकों के निर्माण में अध्यापक शिक्षा की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है शिक्षक तैयार करना एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके लिए अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों में बहु–विषयक दृष्टिकोण और ज्ञान की आवश्यकता के साथ–साथ बेहतरीन मेंटरों के निर्देशन में, मान्यताओं और मूल्यों के निर्माण के साथ ही साथ उनके अभ्यास की भी आवश्यकता होती है जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके कि अध्यापक शिक्षा और शिक्षण प्रक्रिया से सम्बन्धित अद्यतन प्रगति के साथ ही साथ भारतीय मूल्यों, भाषाओं के ज्ञान और परंपराओं आदि के प्रति वे समायोजित हो सके। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि माध्यमिक स्तर विशेष रूप से चुनौतीपूर्ण होता है क्योंकि इस स्तर के विद्यार्थी किशोरावस्था में होते हैं, जो भावनात्मक एवं सामाजिक दृष्टि से संवेदनशील अवस्था है। ऐसे में शिक्षक का संतुलित और समायोजित व्यक्तित्व अत्यंत आवश्यक है। अतः इस स्तर के शिक्षकों में समायोजन का होना आवश्यक है।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण:

पाण्डे एवं देव (2003) ने अपने अध्ययन में उच्च माध्यमिक विद्यालयों की विवाहित तथा अविवाहित महिला शिक्षकों की शिक्षण समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन किया तथा निष्कर्ष में पाया कि अध्यापकों की व्यवसायिक अभिवृत्ति और विभिन्न क्षेत्रों में उनका समायोजन घर व कार्य क्षेत्र की समस्याओं से जुड़ा हुआ है। *शरीफ (2003)* ने अपने अध्ययन में उच्च एवं निम्न वेतनधारी अध्यापकों के समूहों पर शिक्षण के कमजोर पक्ष को देखते हुए उनके समायोजन एवं कार्य–संतोष एवं कार्य–योजना का अध्ययन किया तथा निष्कर्ष में पाया कि शिक्षकों के समायोजन में उनके वेतन का कोई सार्थक प्रभाव नहीं है एवं कार्य–सन्तोष पर शिक्षकों के वेतन की कोई भूमिका प्रभावित नहीं रहती है। *सिंह (2003)* ने अपने अध्ययन शिक्षक एवं शिक्षिकाओं में तनाव उनकी व्यक्तित्व आवश्यकता एवं समायोजन के बीच सम्बन्ध का अध्ययन किया तथा निष्कर्ष में पाया कि शिक्षकों के तनाव तथा समायोजन में सार्थक सह–सम्बन्ध है, एवं माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों में शिक्षिकाओं की तुलना में अधिक तनाव है, जबकि अन्य स्तरों पर शिक्षक और शिक्षिकाओं में समान तनाव है। *बेकेट एवं अन्य (2004)* ने अपने अध्ययन में शिक्षको के समायोजन पर शैक्षिक दृष्टिकोण, शिक्षण विधि, शैक्षिक तकनीकी के प्रभाव का अध्ययन किया तथा निष्कर्ष में पाया कि प्रभावी शिक्षण के लिए शैक्षिक तकनीकी का ज्ञान आवश्यक है क्योंकि कक्षा में तकनीकी के प्रयोग से विद्यार्थियों की उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। *प्रसाद (2004)* ने अपने अध्ययन में गढ़वाल मंडल के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की समायोजन समस्याओं के मनोवैज्ञानिक कारकों का अध्ययन विषय पर अपना अध्ययन कियाद्य प्रतिदर्श के रूप में 500 प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों को यादृच्छिकरण विधि द्वारा चयनित किया गया, उपकरण के रूप में एस.के. मंगल द्वारा निर्मित शिक्षक समायोजन का प्रयोग किया, तथा निष्कर्ष रूप में पाया गया कि प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत समायोजित शिक्षक असमायोजित शिक्षकों की तुलना में असंतुष्ट हैं। अर्थात संतुष्ट शिक्षकों में बेहतर समायोजन क्षमता पाई गई, साथ ही विवाहित एवं अविवाहित शिक्षकों की समायोजन समस्याओं के मनोवैज्ञानिक कारकों में सार्थक अंतर नहीं है। *नायक (2005)* ने 'माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य एवं समायोजन का उनकी आत्म–अवधारणा के विकास पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन' विषय पर अपना शोध कार्य किया अध्ययन के उद्देश्य के रूप में उन्होंने शिक्षकों की वैवाहिक स्थिति, लिंग, शिक्षण अनुभव, शिक्षा का स्तर एवं उनकी आत्म–अवधारणा पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन कियाद्य प्रतिदर्श के रूप में 352 माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों को यादृच्छिकरण विधि से चयनित किया गया, उपकरण के रूप में एस.के. मंगल शिक्षण अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया है, निष्कर्ष रूप में पाया गया कि महिलाओं के पक्ष के संबंध में शिक्षकों का समायोजन लिंग के अनुसार अलग–अलग है। *सिंह (2008)* ने अपने शोध अध्ययन में प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत अध्यापकों की कार्य संतुष्टि, समायोजन एवं व्यावसायिक अभिवृत्ति का अध्ययन किया जिसमें निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए– प्राथमिक विद्यालय के पुरुष शिक्षकों के कार्य–संतुष्टि का मध्यमान महिला शिक्षकों की तुलना में सार्थक रूप से अधिक है। प्राथमिक विद्यालय के पुरुष शिक्षकों की अपेक्षा महिला शिक्षको का समायोजन सार्थक रूप से सकारात्मक पाया गया। प्राथमिक स्तर पर कार्यरत महिला शिक्षकों की अपेक्षा पुरुष शिक्षकों का व्यावसायिक अभिवृत्ति सार्थक रूप से अधिक सकारात्मक है। *निराधर (2009)* ने अपने अध्ययन में माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य एवं समायोजन के अध्ययन में पाया कि शिक्षिकायें मानसिक रूप से अधिक स्वस्थ एवं समायोजित है तथा शिक्षक मानसिक रूप से स्वस्थ परन्तु असमायोजित है। *गुप्ता (2010)* ने अपने शोध अध्ययन समायोजित एवं कुसमयोजित की शिक्षक दक्षता अध्ययन में पाया कि– समायोजित अध्यापकों का मानसिक स्वास्थ्य कुसमयोजित शिक्षको से बेहतर है, समायोजित अध्यापकों तथा कुसमयोजित अध्यापकों की कार्य–संतुष्टि में सार्थक सह–सम्बन्ध है। समायोजित अध्यापकों की शिक्षण दक्षता कुसमयोजित अध्यापकों की अपेक्षा उच्च है। *सिंह (2010)* ने शिक्षकों के अकादमिक रिकॉर्ड, समायोजन और दृष्टिकोण के बीच व्यवसाय पूर्ति के लिए सहयोगी अध्ययन किया जिसके निष्कर्ष में पाया गया कि शैक्षिक रिकॉर्ड में महिला शिक्षकों को प्राथमिकता दी जाती है, हालाँकि

पुरुष प्रशिक्षकों के प्रति मन का अधिक सकारात्मक ढांचा होता है टीजीटी, पीआरटी और प्रासंगिक शिक्षकों की कार्य पूर्ति और विद्वता के बीच सकारात्मक संबंध है। *सिंह (2013)* ने ए स्टडी ऑफ़ ऐडजस्टमेंट ऑफ़ टीचर्स वर्किंग इन सेकेंडरी स्कूल्स इन हरियाणा इन रिलेशन टू सेक्स, प्लेस ऑफ़ वर्किंग, मेंटल स्टेटस एंड अकेडमिक रिजल्ट्स विषय पर अपना अध्ययन कार्य किया। अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैं कि पुरुष और महिला, ग्रामीण और शहरी क्षेत्र में कार्यरत, विवाहित और अविवाहित शिक्षकों में सार्थक अंतर है। शिक्षकों की जो उचित रूप से संतुष्ट और समायोजित एवं कुशल हैं वे शिक्षा में सुधार प्रदान करते हैं। *सुरुचि एवं राणा (2014)* ने पर्सनल, प्रोफेशनल एंड सोशल एडजस्टमेंट गवर्नमेंट एंड प्राइवेट सेकेंडरी स्कूल टीचर्स: अ कम्पेरेटिव स्टडी विषय पर अपना अध्ययन कार्य किया अध्ययन निष्कर्ष में पाया गया अध्ययन किए गए शिक्षकों के व्यक्तिगत, व्यावसायिक और सामाजिक समायोजन में अंतर मौजूद है। शिक्षकों की कार्य कुशलता, शारीरिक, मानसिक और सामाजिक स्वास्थ्य पर सौहार्दपूर्ण कार्य वातावरण नौकरी की सुरक्षा, पर्याप्त अवसर, वित्तीय सहायता के प्रभाव को समझने के लिए अध्ययन उपयोगी है। *दीक्षित एवं सिंह (2015)* ने अपने अध्ययन एडजस्टमेंट एबिलिटी ऑफ़ सेकेंडरी स्कूल के टीचर्स: इन्फ्लुएंस ऑफ़ एक्सपीरियंस में पाया कि अनुभवी शिक्षक स्थिर मानसिकता व भावनात्मक नियंत्रण के कारण अधिक बेहतर समायोजन करते हैं। *शर्मा (2018)* के अनुसार, माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक जब अधिक कार्यभार व समयबद्ध अपेक्षाओं का सामना करते हैं, तो उनकी समायोजन क्षमता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। *जोशी (2019)* ने अपने अध्ययन जेंडर डिफरेंसेस इन एडजस्टमेंट अमोंग सेकेंडरी स्कूल टीचर्स का तुलनात्मक अध्ययन किया तथा निष्कर्ष में पाया कि महिला शिक्षकों में सामाजिक संबंधों के निर्माण की प्रवृत्ति अधिक होने के कारण समायोजन के कुछ आयाम बेहतर पाए गए। *राजपूत एवं मेहता (2021)* के अध्ययन में स्पष्ट हुआ कि शहरी विद्यालयों में संसाधन उपलब्धता तथा प्रशिक्षण कार्यक्रमों की बेहतर उपस्थिति से वहाँ के शिक्षकों की समायोजन क्षमता अक्सर बेहतर पाई गई। वहीं ग्रामीण विद्यालयों में सीमित संसाधन व समर्थ टीम के अभाव में समायोजन को लेकर चुनौतियाँ अधिक देखी गईं। *कौर (2022)* ने अपने अध्ययन प्रोफेशनल डेवलपमेंट एंड टीचर एडजस्टमेंट: ऐन एंपिरिकल स्टडी में पाया कि शिक्षक समायोजन का स्तर उस स्कूल के पेशेवर विकास कार्यक्रमों से भी प्रभावित होता है। नियमित प्रशिक्षण और मनोवैज्ञानिक सहायता से समायोजन क्षमता में सकारात्मक वृद्धि देखने को मिली है।

निष्कर्ष:

माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों का समायोजन विद्यालयी व्यवस्था की गुणवत्ता का प्रमुख निर्धारक है। वर्तमान अध्ययन से स्पष्ट होता है कि समायोजन केवल व्यक्तिगत विशेषता नहीं, बल्कि संस्थागत वातावरण से भी प्रभावित होता है। यदि शिक्षक मानसिक, सामाजिक और व्यावसायिक रूप से संतुलित हैं, तो वे विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में अधिक प्रभावी भूमिका निभा सकते हैं। अतः शिक्षा प्रशासन को शिक्षकों के समायोजन को सुदृढ़ करने हेतु ठोस कदम उठाने चाहिए।

शैक्षिक निहितार्थ:

माध्यमिक स्तर पर कार्यरत शिक्षकों की समायोजन क्षमता का विश्लेषण विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता, विद्यार्थियों के समग्र विकास तथा शैक्षिक वातावरण की प्रभावशीलता से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है। इस प्रकार सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के आधार प्राप्त निष्कर्षों के निम्नलिखित प्रमुख शैक्षिक निहितार्थ हैं– शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सुधार किया जाये, अगर शिक्षकों में भावनात्मक, सामाजिक या व्यावसायिक समायोजन की कमी है तो शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों में तनाव प्रबंधन, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, कक्षा प्रबंधन कौशल एवं सहकर्मी सहयोग तकनीक आदि विषयों को शामिल किया जा सकता है इससे शिक्षकों की कार्यकुशलता और आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। विद्यालयी वातावरण का सुदृढ़ीकरण किया

जाये क्योंकि समायोजित शिक्षक विद्यालय में सकारात्मक वातावरण का निर्माण करते हैं। माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के समायोजन का विश्लेषणात्मक अध्ययन न केवल शिक्षक के व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि यह विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता, छात्र उपलब्धि और शैक्षिक वातावरण को भी प्रभावित करता है। इस प्रकार यह अध्ययन शिक्षक कल्याण, प्रशिक्षण, नीति–निर्माण और विद्यालय प्रबंधन के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होता है।

सन्दर्भ सूचीः

1. कौर, एस. (2022). प्रोफेशनल डेवलपमेंट एंड टीचर एडजस्टमेंटः ऐन ऐम्पिरिकल स्टडी, *एजुकेशन एंड सोसाइटी*, 14(3), 102–115।
2. गुप्ता, पी. (2010). ए स्टडी ऑफ एडजेस्टेड एंड मेलाएडजेस्टेड टीचर्स इन रिलेशन टू टीचर कम्पीटेंसीज, *एनएमबी केयर जर्नल ऑफ एजुकेशन*, वाल्यूम–2, पेज–40–46।
3. जोशी, पी. (2019). जेंडर डिफरेंसेस इन एडजस्टमेंट अमोंग सेकेंडरी स्कूल टीचर्स, *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एजुकेशन रिसर्च*, 8(1), 78–85।
4. दीक्षित, ए., एवं सिंह, आर. (2015). एडजस्टमेंट एबिलिटी ऑफ़ सेकेंडरी स्कूल के टीचर्सः इन्फ्लुएंस ऑफ़ एक्सपीरियंस, *जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल साइकोलॉजी*, 23(2), 45–52।
5. नायक, एन. (2005). *माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य एवं समायोजन का उनकी आत्म–अवधारणा के विकास पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन*, शोध–प्रबन्ध, शिक्षाशास्त्र विभाग उत्कल वि''वविद्यालय भुवने''वर, उड़ीसा।
6. निराधर देव (2009). टीचर ऐडजेस्टमेंट एंड मेंटल हेल्थ, *आईजेपीई पथ*, वाल्यूम– 40 (1–2) पेज– 159–162।
7. पाण्डे एवं देव (2003). रियलटिज ऑफ टीचिंग एक्सप्लोरेन्सस विथ विडियो टेप, *न्यूयार्कः रिनहर्ट एण्ड पिटंसन*, पृष्ठ– 55–64।
8. प्रसाद, एस. (2004). *गढ़वाल मंडल के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की समायोजन समस्याओं के मनोवैज्ञानिक कारकों का अध्ययन*, शोध–प्रबन्ध शिक्षाशास्त्र विभाग गढ़वाल वि''वविद्यालय उत्तरांचल।
9. बैकेट एवं अन्य (2004). टीचर ऐडजेस्टमेंट टू टेक्नालोजी ओवर कमिंग कल्चर माईंडसेट्स, *जर्नल ऑफ एजुकेशनल टेक्नालोजी सिस्टम*, वैल्यूमः 33(2) पेज 147–156।
10. मंगल, एस. के. (2011). शिक्षा मनोविज्ञान, *पी.एच.आई लर्निंग प्राईवेट लिमिटेड*, पृष्ठ–574।
11. राजपूत, आर., एवं मेहता, एल. (2021). अ कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ़ एडजस्टमेंट अमोंग रूरल एंड अर्बन सेकेंडरी टीचर्स, *इंडियन जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल स्टडीज़*, 10(2), 34–49।

12. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020, *शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार*।

13. शर्मा, एन. (2018). वर्कलोड, स्ट्रेस एंड एडजस्टमेंट अमोंग सेकेंडरी स्कूल टीचर्स, *एजुकेशन टुडे,* 6(1), 25–33।

14. शरीफ, रन. वाई. (2003). ए स्टडी ऑफ लॉ एंड हाई सेलरीज ग्रुप टीचर्स विजुअली इम्परीड इन रिलेशन टू दीयर एडजेस्टमेंट जॉब सटिस्फेक्शन, *इंडियन एजुकेशन रिव्यु*।

15. शेफर, एल. एस. (1956). द साइकोलॉजी ऑफ़ एडजस्टमेंट, *बोस्टन हंगटन मिफिफ्लन* 3।

16. सिंह, एच. (2003). ए कम्परेटिव स्टडी ऑफ स्ट्रीज एमंग मेल एंड फीमेल टीचर्स इन रिलेशन टू दियर पर्सनालिटी नीड्स एंड ऐडजेस्टमेंट, *इंडियन एजुकेशन,* 3: 2 एनसीईआरटी।

17. सिंह, आर.के. (2008). *प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत अध्यापकों की कार्य संतुष्टि, समायोजन एवं व्यावसायिक अभिवृत्ति का अध्ययन'* अप्रकाशित शोध–प्रबन्ध, शिक्षा संकाय महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड वि"वविद्यालय बरेली।

18. सिंह, ए.के. (2010). अ स्टडी ऑफ एकेडमिक रिकॉर्ड, एडजस्टमेंट एंड एटिट्यूड एज़ पूर्वी केंद्रीय विद्यालय एमंग टीचर्स जॉब सटिस्फेक्शन, *भारतीय शैक्षिक समीक्षा,* खंड 47,संख्या 2।

19. सिंह, बी.पी. (2013). ए स्टडी ऑफ़ ऐडजस्टमेंट ऑफ़ टीचर्स वर्किंग इन सेकेंडरी स्कूल्स इन हरियाणा इन रिलेशन तो सेक्स, प्लेस ऑफ़ वर्किंग, मेंटल स्टेटस एंड अकेडमिक रिजल्ट्स, *रिसर्च जर्नल फॉर ह्यूमैनिटी, साइंस एंड इंग्लिश लिट्रेचर,* वोल्यूम 1, इश्यू 5, पेज 643–649।

20. सुरुचि एवं राणा, एस. एस. (2014). पर्सनल, प्रोफेशनल एंड सोशल एडजस्टमेंट पफ गवर्नमेंट एंड प्राइवेट सेकेंडरी स्कूल टीचर्स: अ कम्पेरेटिव स्टडी, *रिसर्च जर्नल फॉर ह्यूमैनिटी, साइंस एंड इंग्लिश लिट्रेचर,* वॉल्यूम 1, इश्यू 2 पेज 244–252।